अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

2.2 संबंधित साहित्य का अर्थ

2.3 संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण का कार्य

2.4 संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण से लाभ

2.5 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन के विशिष्ट उद्देश्य

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है, चाहे वो किसी भी क्षेत्र का हो। शोध कार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है, क्योंकि यह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है, जिसके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता को आगे बढ़ने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। उसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है, तब तक वह न समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है।

2.2 संबंधित साहित्य का अर्थ

संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित् तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है, जिसके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन परिकल्पनाओं के

निर्माण,अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

2.3 संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण का कार्य

- यह अनुसंधान के लिये आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है।
- इसके द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि, इस समस्या क्षेत्र में अनुसंधान की स्थिति क्या है? क्या, कब, कहां, किसके और कैसे अनुसंधान कार्य किया है? इसकी जानकारी देना है।
- संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण, अनुसंधान के लिये अपनायी जाने वाली विधि, प्रयोग में लाये जानेवाले योग्य उपकरण तथा आंकड़ों के विश्लेषण के लिये प्रयोग में आनेवाली उपयुक्त विधियों को स्पष्ट करता है।
- इसका महत्वपूर्ण कार्य समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणा बनाने, समस्या के सीमांकन और परिकल्पना के निर्माण में सहायता करना है।

2.4 संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण से लाभ

- अब तक इस क्षेत्र में हो चुके कार्य की सूचना देना है।
- यह समस्या के चुनाव, विश्लेषण एवं कथन में सहायक होता है।
- अनुसंधानकर्ता के समय की बचत करता है।
- इससे अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है।
- यह अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है।

2.5 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन के विशिष्ट उद्देश्य

संबंधित साहित्य की समीक्षा अनुसंधारक को किस क्षेत्र में वह अनुसंधान करने वाला है। उसमें वर्तमान ज्ञान से परिचय कराती है तथा निम्न विशिष्ट उद्देश्य पूर्ण करती है :-

- संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधारक को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है।
- उपयुक्त शोध विधियों में मदद करता है।
- परिकल्पना, अध्ययन व उससे संबंधित व्याख्या हेतु आकड़ों का निर्धारण करने में मदद करता है।

इस संदर्भ में संबंधित प्राप्त साहित्य एवं शोधकार्यो का विवरण निम्नलिखित है :-

1. परिहार मुलायम सिंह (1994-2003)

"शिक्षा गारंटी योजना की प्रभावशीलता का अध्ययन"

उद्देश्य :-

1. शिक्षा गारंटी योजना का रूपात्मक मूल्यांकन करना ताकि समय रहते निदानात्मक एवं उपचारात्मक प्रविधि में सुधार लाकर उसकी प्रभावशीलता में वृद्धि की जा सके।
2. शिक्षा गारंटी योजना का योजनात्मक मूल्यांकन करना ताकि उसकी सफलता/असफलता का पता लगाकर संबंधित सुझाव दिये जा सके।
3. प्राथमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण के साधन के रूप में ई.जी.एस. की सहभागिता का आकलन करना।
4. योजना प्रारंभ होने के पश्चात् 6-11 वर्ष आयु वर्ग के बालक/बालिकाओं की शाला में दर्ज संख्या स्थिति का पता लगाना।
5. प्राथमिक शिक्षा स्तर बढ़ाने में शिक्षा गारंटी के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. योजना के प्रबंधकारी संचालन हेतु सुझाव देना।

परिकल्पना

1. शिक्षा गारंटी योजना (ई.जी.एस.) स्कूल द्वारा प्राथमिक शिक्षा का प्रसार पहुंच विहीन क्षेत्रों में हो रहा है।
2. प्राथमिक शिक्षा सभी क्षेत्रों में सभी को 1 कि.मी. दूरी पर उपलब्ध कराने में योजना सफल है।
3. ई.जी.एस. सकूलों में पढ़ाई का स्तर प्राथमिक शिक्षा के अनुरूप है।
4. शिक्षा गारंटी योजना के संचालन में जनभागीदारी है।

निष्कर्ष

1. ई.जी.एस. स्कूलों में भाषा विकास विषय में छात्रों का स्तर न्यूनतम अधिगम स्तर के राष्ट्रीय मानक के अनुरूप है।
2. पर्यावरण अध्ययन में छात्रों का उपलब्धि स्तर न्यूनतम अधिगम की दक्षताओं के अनुरूप है।
3. छात्रों को जो पुस्तक पढ़ाई जा रही है, उनको गुरूजी छात्रों के अनुकूल मानते है।
4. शिक्षण सामग्री खरीदने हेतु राशि दी जाती है, वह पर्याप्त नहीं है।
5. छात्रों की संख्या के अनुपात में शालाओं में गुरूजी नियुक्त नहीं है।
6. गुरूजी मानदेय का समय पर भुगतान नहीं किया जाता है।

2. अग्रवाल उमेशचन्द्र (जनवरी–2008)

सर्वशिक्षा अभियान की उपलब्धियों को तो नजर अंदाज नहीं किया जा सकता, परंतु इस कार्यक्रम का संचालन प्रत्येक राज्य में बेहतर तरीके से नहीं हो पा रहा है। सर्व शिक्षा अभियान की संकल्पना उसके लक्ष्य व प्रगति को विश्लेषण करने के साथ–साथ इस अभियान की सफलता सुनिश्चित करने के लिये कुछ सुझाव भी दिये गये है।

1– सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा को कानूनी रूप से अनिवार्य घोषित करके इसका सख्ती से अनुपालन सुनिश्चित कराया जाना चाहिये।

2– हर हालत में देश के प्रत्येक गाँव और बस्ती में प्राथमिक विद्यालय की उपलब्धता और उसमें पर्याप्त आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जाना चाहिये।

3– सभी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति सुनिश्चित की जाये।

4– सामान्यतया प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के पास शिक्षण कार्य के अलावा ग्राम पंचायत स्तर तक से लेकर संसद तक के चुनाव संबंधी कार्य, जनगणना, बालश्रमिक गणना, गरीबों की गणना जैसे अनेक कार्यों को संपादित किये जाने का दायित्व दिया जाता है, जिससे वे शिक्षण सत्र के अधिकांश दिनों में शिक्षणकार्य पर कुप्रभाव पड़ता है।

5– अभियान की सफलता हेतु आवश्यक है कि प्रत्येक स्तर पर अनुश्रवण की नियमित, व्यावहारिक और प्रभावी व्यवस्था सुनिश्चित की जाये और उसका कठोरता से पालन किया जाये।

3. जैन दिनेश कुमार (1997–98)

"बिलासपुर जिले में क्रियान्वित वैकल्पिक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण एवं उनमें कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक अभियोग्यता का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

1– वैकल्पिक विद्यालयों की उपलब्धता का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

2– वैकल्पिक विद्यालयों में उपलब्ध भौतिक संसाधनों का अध्ययन करना।

3– वैकल्पिक शाला के शिक्षकों की अभियोग्यता का अध्ययन करना।

4– वैकल्पिक शाला के शैक्षिक वातावरण के स्तर का आंकलन करना।

5– वैकल्पिक विद्यालयों में अनुकूल शैक्षिक वातावरण के कारण शाला में प्रवेश लेने का आकलन करना।

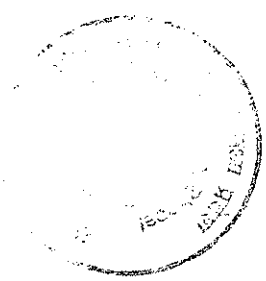

परिकल्पनायें

1. क्रियान्वित शालाओं में शिक्षक अपेक्षित संख्या में कार्यरत है।
2. वैकल्पिक शालाओं में कार्यरत पुरुष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों के अभियोग्यता स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।
3. वैकल्पिक शालाओं के शिक्षकों की शैक्षिक अभियोग्यता प्राथमिक शाला के लिये मान्य शैक्षिक अभियोग्यता के स्तर की होती है।
4. वैकल्पिक शालाओं के शैक्षिक वातावरण एवं औपचारिक शालाओं के शैक्षिक वातावरण में सार्थक अंतर होता है।
5. उच्च एवं निम्न शैक्षिक वातावरण की शालाओं में बालकों की दर्ज संख्या में अंतर होता है।

निष्कर्ष

1. विकासखण्डों के वैकल्पिक शालाओं में कार्यरत कुल शिक्षकों में पुरुष शिक्षकों का प्रतिशत कोटा में 50 प्रतिशत पंडरिया में 33.33 प्रतिशत पामगढ़ में 50 प्रतिशत कटघोरा में 52.63 प्रतिशत, पायरिया में 56.25 प्रतिशत है।
2. विकासखंडों के वैकल्पिक शालाओं में कार्यरत कुल शिक्षकों में महिला शिक्षिकाओं का प्रतिशत कोटा में 50 प्रतिशत पंडारिया में 66 प्रतिशत पामगढ़ में 50 प्रतिशत कटघोरा में 47.37 प्रतिशत पथरिया में 43.75 प्रतिशत है।
3. सभी विकासखण्डों में महिला शिक्षिकाओं की पर्याप्त संख्या में नियुक्ति के कारण बालिकाओं का विद्यालय के प्रति आकर्षण बढ़ा है जिससे कटघोरा विकासखण्ड को छोड़कर सभी विकास खण्डों में बालिकाओं की दर्ज संख्या अधिक है।
4. वैकल्पिक विद्यालय में शत-प्रतिशत शिक्षक स्थानीय व निकाय द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त है।
5. वैकल्पिक विद्यालयों में 8.49 प्रतिशत शिक्षकों की योग्यता मैट्रिक से कम है।

6. वैकल्पिक शालाओं में शिक्षक अपेक्षित संख्या में कार्यरत नहीं है।
7. वैकल्पिक शालाओं का शैक्षिक वातावरण औपचारिक विद्यालयों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ है।

4. भार्गव अशोक कुमार (1997)

''झुग्गी–झोपड़ी परिवार के प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी सामाजिक, आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन''

उद्देश्य

1. अध्ययनरत झुग्गी–झोपड़ी परिवारों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
2. अध्ययनरत झुग्गी–झोपड़ी परिवारों के छात्र–छात्राओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का ज्ञान करना।
3. अध्ययनरत झुग्गी–झोपड़ी के बालकों की शैक्षणिक उपलब्धि पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1. झुग्गी–झोपड़ी परिवार के अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक उपलब्धि बालिकाओं की तुलना में अधिक है।
2. झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाले पालकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निरक्षर पालकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में सार्थक रूप से अधिक पायी गया है।
3. झुग्गी–झोपड़ी परिवार में रहने वाले अनुसूचित जाति, जनजाति के विद्यार्थियों की उपलब्धि अन्य सामान्य वर्ग व पिछडे वर्ग के विद्यार्थियों की उपलब्धि की तुलना में न्यूनतम पाया गया है।

4. झुग्गी–झोपड़ी के साक्षर पालकों के बालकों–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके सामाजिक, आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक संबंध नहीं है।
5. झुग्गी–झोपड़ी के निरक्षर पालकों के बालकों–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके सामाजिक, आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक धनात्मक सह संबंध नहीं देखा गया।

5. तिवारी युगल किशोर (जनवरी–2008)

"शिक्षा गारंटी शालाओं के शिक्षकों की दक्षता : छत्तीसगढ़ में राजनांदगांव जिले का अध्ययन"

मध्यप्रदेश की "शिक्षा गारंटी योजना" अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत योजना है। उसकी सराहना, नवाचार, प्रभावशीलता, सामयिकता महत्व और संदर्भो में उपयुक्तता के लिये की गई है। प्रारंभिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण हेतु "सर्व शिक्षा अभियान" कार्यक्रम में इस योजना के मॉडल को अपनाया गया है। संदर्भित लेख में इस योजना में कार्यरत शिक्षकों की विषयगत दक्षता का परीक्षण, उनके प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन शिक्षकों की कमी व उनके कारण तथा सुधार संबंधी उपयुक्त सुझाव आदि का सविस्तार उल्लेख है।

निष्कर्ष

1. स्थानीय शिक्षक नियुक्ति की नीति निःसंदेह शिक्षक अनुपस्थिति, बाहरी शिक्षक और ऐसी ही अन्य समस्याओं की दिशा में कारगर विकल्प के साथ ही समय की मांग है। साथ ही शिक्षक नियुक्ति में न्यूनतम शैक्षिक योग्यता संबंधी पर्याप्त सावधानी बरतने की सतत आवश्यकता है। प्राथमिक शिक्षक किसी भी दशा में कक्षा 12वीं से कम न हों

2. अध्ययन में कई क्षेत्रों में शिक्षक की उपलब्धि अत्यंत असंतोषप्रद पाई गई है। शिक्षक की विषय पर गहरी पकड़ एवं समझ आवश्यक है।

3. सबके लिये एक ही समान प्रशिक्षण कार्यक्रम से शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यक्तिगत कमजोरी दूर नहीं हो पाती है। अतएव शिक्षकों की योग्यता/दक्षता एवं खामियों पर आधारित सामग्री का समुचित समूहीकरण कर अलग-अलग प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये।

4. शिक्षक/शिक्षिकाओं में परस्पर अन्तःक्रिया को बढ़ावा देने, अंतर स्कूल, अंतर विकास खण्ड विनिमय कार्यक्रम का समय-समय पर आयोजन प्रभावी होगा।

5. प्रस्तावित स्वअधिगम पर विचार-विमर्श हेतु मासिक समीक्षा बैठकें कारगर भूमिका निभा सकी है।

6. शिक्षक की भूमिका का विस्तार भी समय की महती आवश्यक है, मामला चाहे पठन-सामग्री विकास, प्रशिक्षण सामग्री की तैयारी हो या विद्यालय/शिक्षक संबंधी कोई भी गतिविधि।

6. **श्रीवास्तव सुजाता - भारत में मुफ्त प्राथमिक शिक्षा पर्यायी शाला शिक्षा व्यवस्था**

भारत एक विकासशील देश है,तभी उसकी उत्पादन क्षमता बहुत कम है और इसलिये ऐसे देश में गरीब बच्चें/बेघर बच्चों को शिक्षा की मदद देना बहुत महत्वपूर्ण है। समय-समय पर इस बात पर ध्यान देना जरूरी है। भारतीय संविधान के अनुसार बालमजदूरी एवं बाल कामगार में फरक होता है।

भारतीय संविधान के दफा-24 के अनुसार किसी भी कंपनी में 14 साल से कम के बच्चों को काम पर रखना कानूनन अपराध है। ये सार्वजनिक स्वास्थ्य व सुरक्षा के हिसाब से बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चे तो किसी भी राष्ट्र की संपत्ति होती है। संविधान के धारा-39 के अनुसार राज्य इसके लिये प्रतिबद्ध है कि, बच्चे उसी तरह कम उम्र

वाले कोई भी मजदूर को उसकी क्षमता के अनुसार काम पर रखते नहीं आता। ऐसा स्पष्ट है।

इसलिये अर्ध–काम (Part-time) कार्य की जिसमें बच्चे लगे हुये है। उन्हें अगर स्कूल के माध्यम से पूरे साल तक स्कूल में भेजे तो उचित है। साथ ही औपचारिक शिक्षा पद्धति को थोड़ा–सा लचीला (Flexible) कर दे तो पर्यायी शिक्षा एक अलग और नये मार्ग के रूप में शिक्षा के लिये महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।

7. **डॉ. डिगूमारति भास्कर (26 जनवरी 2009)**

अनौपचारिक शिक्षा पद्धति औपचारिक शिक्षा पद्धति की एक उपायात्मक शिक्षा पद्धति है और इस पद्धति के बारे में अनेक विचारक और शिक्षाविदों ने 'सर्वशिक्षा अभियान' को महत्वपूर्ण योजना कहा है। अनौपचारिक शिक्षा पद्धति से केवल योजना ही यशस्वी नही तो औपचारिक शिक्षा पद्धति को बढ़ावा देने का काम भी किया गया है। इतना ही नही तो अध्ययन और अध्यापन पर पुर्नविचार करने के लिये बाध्य किया गया है।

8. **गुप्ता नरेश कुमार (2008)**

केवल जागतिक शिक्षा संधी की उपाय योजना और शिक्षा का सार्वत्रिकरण इतना ही शिक्षा का उद्देश्य नही, बल्कि उचित शिक्षा व योग्य मार्गदर्शन है। शिक्षा का सार्वत्रिकरण सही मायने में मनाया जाना चाहिए।

शालाबाहय बच्चों के लिए समाज का उत्साहपूर्वक सहभागिता को मदद से पर्यायी और नवीनतम शिक्षा पद्धति कार्यक्रम को किया जाना चाहिए, क्योंकि वही यश प्राप्त करने का राजपथ है।